'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

# विनोबा-प्रवचन

( सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित )

वर्ष ३, अंक ८२ } वाराणसी, शनिवार, ११ जुलाई, १९५९ { पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

नौशेरा (कश्मीर) २०-६-'५९

## निडर और शूर ही शान्तिसेना के लिए कामयाब

हमने जब से जम्मू और काश्मीर में कदम रखा है, तब से यहाँके कुछ भाई हमारे इन्तजाम में लगे हैं। उनके मुखिया हैं, "मेजर-जनरल यदुनाथसिंह"। यह तो छोटी बात है। यहाँके पुराने लोगों को मालूम है कि १०-१२ साल पहले नौशेरा में जब पाकिस्तान की तरफ से कुछ हमले हुए थे, तब हमारे सिपाहियों ने यदुनाथसिंहजी के मार्गदर्शन में ही यहाँके लोगों को बचाने का काम किया था। यहाँके बुजुर्ग लोग इस काम के लिए उनको याद करते हैं। हमारे पिताजी (श्री मेहता नानकचंद) यहाँ बैठे हैं। इन्होंने भी उस समय यहाँके लोगों को खिलाने-पिलाने और इन्तजाम करने का बहुत काम किया था। फिर भी फौज की तरफ से लोगों को बचाने का काम यदुनाथसिंहजी ने ही किया था। इसलिए यहाँके लोग उन्हें याद करते हैं। वैसे वे तो बरसों फौज में काम कर चुके हैं तथा अब आपको यह सुनकर खुशी और शायद आश्चर्य भी होगा कि उन्होंने शान्तिसेना में अपना नाम दिया है। यों तो यह नाम उन्होंने तभी दिया था, जब वे अजमेर में सर्वोदय-संमेलन में आये थे। लेकिन लिखित रूप में अब दिया, जब हमने जम्मू और कश्मीर में कदम रखा है।

### फौजवाला शान्ति-सेना में कैसे?

मैंने कहा कि यह सुनकर आपको खुशी होगी और यह भी कहा कि शायद आपको अचरज भी होगा कि फौजवाला आदमी शान्तिसेना में नाम कैसे दे सकता है? पर बात यह है कि शान्तिसेना का काम बुजदिलों का, डरपोक लोगों का नहीं है। जो निर्भय हैं, निडर हैं, उन्हींका यह काम है। एक गुजराती भगत ने कहा है—"हरीनो मारग छे शूरानो।" हरि के मार्ग में जो बहादुर हैं, शूर हैं, वे ही जा सकते हैं। वैसे ही हम कहते हैं कि शान्तिसेना में जो शूर हैं, वे ही आ सकते हैं। जिनको अपने जिस्म के लिए बहुत ज्यादा मोह है, जो अपने ऐज़ा पर जब्त नहीं रख सकते, गुस्से को मौके पर रोक नहीं सकते, वे शान्तिसेना में नाकामयाब होंगे। संस्कृत में धर्म का एक वचन है "क्षमा वीरस्य भूषणम्।" सब्र रखना, बरदाश्त करना, क्षमा करना उसके लिए गहना है, जो बहादुर है। क्षमा, सब्र, बरदाश्त करना मामूली बात नहीं। उसके लिए बहादुरी चाहिए। गुस्से में खून कर दें और मारने की ख्वाहिश रखें, यह बहादुरी नहीं। इसी तरह जो बुजदिल डरते-डरते भाग जाता है, पीठ दिखाता है, वह भी दिल में ख्वाहिश रखता है कि हमें कोई बचाये। इस तरह भागनेवाला बाहर से नहीं, लेकिन अंदर से खून करता है। वह अहिंसक नहीं है। अहिंसक तो वह है, जो निडर है, जिसे यह जिस्म कपड़े के मुआफिक मालूम होता है। इसे हम मौके पर फेंक सकते हैं, ऐसी हिम्मत जो रखता है, वही अहिंसक है।

### इंग्लैंड सेना का आसरा छोड़ने की हिम्मत करे

हम कई दफा कहा करते हैं कि कोई देश 'दुश्मन क्या करता है' यह न देखे और लश्कर का, फौज का आसरा छोड़ देने की हिम्मत कर दिखाये। आखिर कौन-सा मुल्क ऐसी हिम्मत कर सकेगा? डरपोक मुल्क कभी ऐसा नहीं कर सकता। बल्कि मैंने तो एक दफा यह भी उम्मीद की थी कि इंग्लैंड जैसा देश ऐसी हिम्मत कर सकता है। हिन्दुस्तान भी ऐसी हिम्मत कर सकता है। हिन्दुस्तान में एक परम्परा है। यहाँके खून में प्रेम और अहिंसा की बात है। गांधीजी ने भी एक राह दिखायी थी। लेकिन हिन्दुस्तान उसे कर नहीं सका। कारण, अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान के लोगों से जबरदस्ती शस्त्र छीने थे। वे बंदूक वगैरह भी लाइसेन्स पर देते थे। इस तरह जबरदस्ती उन्होंने पूरे देश को अपने काबू में कर लिया और उससे शस्त्र छीन लिये। इस तरह शस्त्र छीने जाते हैं तो एकदम हिम्मत नहीं होती। लेकिन अब उसे आजादी मिली है तो धीरे-धीरे हिम्मत बढ़ेगी। फिर भी चाहे अड़ोस-पड़ोस के देश कुछ भी करें, लेकिन हम अपनी सेना कम करते हैं—ऐसा कहना आज उसके लिए नामुमकिन है। किन्तु इंग्लैंड जैसा ऐसा यह कर सकता है। भारत का कब्जा छोड़कर उसकी इज्जत बहुत बढ़ गयी है। कुछ लोग समझते हैं कि इससे इंग्लैंड की इज्जत कम हुई है और वह दुय्यम दर्जे का मुल्क साबित हुआ है। लेकिन यह गलत खयाल है। हम समझते हैं कि इससे उसकी अखलाकी, आध्यात्मिक इज्जत

हुई है। इसलिए अगर वह लश्कर भी छोड़े तो उसकी इज्जत और बढ़ेगी। लेकिन यह हिम्मत उसमें भी नहीं दीखती, क्योंकि उसने भारत को लाचारी से छोड़ा है। आखिर तक वह कहता रहा कि हमने हिन्दुस्तान को आजादी के लायक बनाकर छोड़ा है। याने हमारे पुराने कारनामे अच्छे रहे, यही इसका मतलब है। लेकिन अगर वह समझे कि हमने हिन्दुस्तान पर कब्जा कर गलत काम किया था और उसे हमने सुधारा तो उसकी अखलाकी ताकत और इज्जत बढ़ेगी। फिर भी हमें यह मानना ही होगा कि एक तारीख मुकर्रर करके अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान का कब्जा छोड़ा। यहाँ तक कि माउण्ट बेटन को आपके नेताओं ने रोक लिया और हमारी बिनती से ही वे यहाँ ज्यादा रहे। इससे उनकी इज्जत बहुत बढ़ी है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि इंग्लैंड ऐसी हिम्मत कर सकता है।

## शान्ति-सैनिक कौन बन सकता है ?

मैं कहना यह चाहता था कि शान्ति-सेना कैसे और किससे बनेगी ? बिल्ली चूहे के सामने शेर बनती है और कुत्ते के सामने चूहा। शेर को अगर इल्म हो जाय कि जङ्गल के राजा का काम खाना नहीं, खिलाना है तो वह हिरन, खरगोश आदि को खायेगा नहीं। बिल्ली चूहे को नहीं खायेगी। जो शेर हिरन के सामने बहादुर बनता है, वह बन्दूक के सामने डरपोक बन जाता है; क्योंकि ये सारे डरपोक हैं। डरनेवालों का काम शान्ति-सेना में नहीं है। जो बहादुर हैं, शेर हैं, उन्हींका यह काम है। लेकिन शेर को भी इल्म हो जाय तो वह आगे बढ़ सकता है।

उपनिषदों में कई दफा जिक्र आता है कि ब्राह्मण क्षत्रिय के पास ज्ञान के लिए जाते हैं। कारण यही है कि जिसने अपनी जान हथेली पर ली है, वही ब्रह्मविद्या को, आत्म-विद्या को पहचान सकता है। वही अपने जिगर को अलग करके पहचान सकता है। यह आदत एक अनुशासन के तौर पर सेना में हो जाती है। इसलिए मैं तो मानता हूँ कि सिपाहियों में से अच्छे शान्ति-सैनिक बन सकते हैं। इसका मानी यह नहीं है कि शान्ति-सैनिकों को पहले सिपाही बनना चाहिए। लेकिन जिनको तजुरबा है, वे उस खूबी के साथ शान्ति-सैनिक बन सकते हैं।

## शान्ति-सैनिकों को सदैव काम

जब कोई जंग छिड़ जायगा, तभी शान्ति-सैनिक की जरूरत है, ऐसी बात नहीं। शान्ति-सैनिक रोज-मर्रा सेवा करेगा, लोगों का खिदमतगार बनेगा। इस तरह जो लोगों के दिल में पैठ सके हैं, लोगों के दिलों पर कब्जा कर चुके हैं, वे ही खिदमत कर सकते हैं। जिन्होंने खिदमत नहीं की, प्यार हासिल नहीं किया, वे शान्ति-सेना के काम में कायम हों, यह नामुमकिन है। यहाँ Cease Fire Line है। इसमें कभी लड़ाई छिड़ जाय तो यहाँके सिपाहियों को काम मिलेगा। आज क्या काम है ? यही कि टहलना और जाब्ता रखना। लेकिन शान्ति-सैनिकों को सिर्फ दंगा-फसाद होने पर ही काम मिलेगा, ऐसा नहीं है। दंगा-फसाद नहीं होगा, तब भी सेवा का काम शान्ति-सैनिक कर सकता है। उसके लिए शान्ति के समय टहलना और खाया हुआ हजम करने के लिए दौड़-धूप करना ही काम नहीं रहेगा। वह तो दिन भर खिदमत करेगा। समाज में बच्चों की, बूढ़ों की, बीमारों की सेवा करेगा। लोगों की दुश्वारियाँ सुनेगा। यह बात नहीं कि वह लोगों की हर मुश्किल, हर दुश्वारी हल कर सकेगा, दूर कर सकेगा। उसकी इतनी ताकत नहीं है। लेकिन दिलासा अवश्य देगा, हमदर्दी अवश्य दिखायेगा और उनकी दुश्वारियाँ गाँववालों के सामने रखकर सबकी मदद से उनका हल निकालने की कोशिश करेगा। भाई-भाई के झगड़े वगैरह कोर्ट में नहीं जाने देगा। इस तरह का काम दिन भर शान्ति-सैनिक को मिलेगा। वह घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखायेगा। हमारे हाथों से गलत काम नहीं होगा—ऐसी प्रतिज्ञाएँ कर लोगों से घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखने के लिए कहेगा।

## कामयाबी का मापदंड

शांति-सैनिक की कामयाबी इसीमें है कि कहीं दंगा-फसाद न होने पाये। अगर कहीं दंगा-फसाद हो जाय, वहाँ शांति-सैनिक पहुँचे और दंगे को रोक पाये तो वह उसकी कामयाबी मानी जाती है। लेकिन जिस मैदान में वह काम कर रहा है, वहाँ दंगा न होना, यह भी उसकी कामयाबी मानी जायगी। सिर फुड़वाने का मौका न आये तो कुछ तो फोड़ना ही चाहिए, इसलिए वहाँ वह नारियल फोड़ेगा। यह उसकी कामयाबी मानी जायगी। कहीं अंधेरा है और वहाँ लालटेन ले गये। फिर लालटेन ने अंधेरे पर हमला किया। प्रकाश और अंधेरे की लड़ाई हुई। आखिर अंधेरे को प्रकाश ने खत्म कर दिया—ऐसा कभी नहीं होता। ऐसा हुआ तो वह लालटेन नाममात्र का ही होगा। शांति-सैनिक नंबर एक तो वह है, जिसके रहते दंगा-फसाद न हो। यह हुआ तो नंबर एक की कामयाबी हुई। फिर कहीं झगड़ा हुआ और उसे रोकने के लिए उसने पुलिस को आने नहीं दिया तो यह भी बड़ा काम है। पर बड़ा होते हुए भी वह उत्तम दर्जे का नहीं है।

## कसौटी क्या हो ?

शांति-सेना का यह विचार बड़ा ही दिलचस्प है। जम्मू और कश्मीर में हमें रोजमर्रा शांति-सेना में ५०२ नाम मिल रहे हैं। उधर हिन्दुस्तान के लोग कहने लगे कि यह क्या बेवकूफों की जमात है ? हमने कहा—आओ भाई ! तमाचा लगाकर देखो। लेकिन मारने पर भी मनुष्य खामोश रह सकता है। मेरे जैसे को मार खाने की आदत ही होती है। (हम बचपन में शरारत करनेवाले थे। अकसर देखा गया है कि बचपन में शरारत करनेवाले आगे चलकर शरीफ बनते हैं और दुनिया का काम करते हैं।) अतः हमें मारनेका डर नहीं। जिसे पिताजी ने कभी पीटा ही नहीं, उसे इसकी आदत ही नहीं होती। इसलिए उसे गुस्सा आता है। इतने से सही परख नहीं होती। अपमान हो तो भी शांत रहना चाहिए। गुस्सा नहीं आना चाहिए। इस तरह परीक्षा होती है। बात यह है कि जिसका भगवान पर भरोसा है, उसे गुस्सा नहीं आयेगा।

## भगवान के गुण हममें आयें

आज हमने एक भाईसे कहा कि शांति-सैनिक को निर्भय, निर्वैर बनना चाहिए। इसपर वह बोला कि "यह तो भगवान का वर्णन है। हम इस तरह कैसे बनें ?" मैंने कहा : "बिनु गुण कीने भगती न होई" (जपुजी)। याने परमात्मा के गुण हम हासिल नहीं करेंगे तो भक्ति नहीं होगी। परमेश्वर दयालु हैं। अगर हम निठुर बने रहें तो उसकी इबादत नहीं होगी। भक्ति नहीं होगी। इबादत करना याने परमात्मा के गुणों का एक हिस्सा हमें मिलना

चाहिए। वे दयालु हैं, पूरे दयालु हैं। अतः हमें उसका एक हिस्सा तो हासिल करना ही चाहिए। वे सत्यनिष्ठ हैं, निर्भय हैं तो हमें भी उन गुणों को हासिल करना, उनको अपने अन्दर महसूस करना चाहिए, यही भक्ति है। भगवान तो सब जगह हैं। इस पेड़ पर भी वे हैं। दिल में भी हैं। इसलिए ऐसी गलतफहमी में मत रहिये कि भगवान किसी परले गोशे में हैं। वे तो सर्वत्र हैं। बड़े-बड़े योगी गुफाओं में सालों रहते हैं और बड़े शांत रहते हैं, क्योंकि वहाँ उन्हें खाना-पीना सब समय पर मुफीद मिल जाता है, शान्ति रहती है। किसीसे टक्कर नहीं होती, लेकिन जहाँ गाँव में आये वहीं बच्चों की चिल्लपों से उन्हें तकलीफ होती है, गुस्सा आ जाता है। उनका दिमाग इतना हलका, इतना नाजुक बन जाता है कि जरा कहीं आवाज हुई तो उनकी समाधि भंग हो जाती है। पर ऐसी समाधि किस काम की? इसलिए ऐसे गोशे में भगवान बैठे हैं, ऐसी गलतफहमी में मत रहो। भगवान यहाँ दिल में भी हैं, उस पेड़ में भी है, पत्थर में भी हैं—यह जिसने पहचाना, उसे दीदार का दर्शन हो चुका। यही भक्ति का स्वरूप भी है। अतः सत्य, दया, प्रेम, करुणा, ये उसके गुण हममें आने चाहिए।

### तादाद में फर्क, पर जायका एक

इसीलिए कहते हैं कि परमात्मा के उन गुणों का बयान करते-करते एक दिन वे हममें आ जायँगे। उनमें गुण पूरे हैं। उससे थोड़ी मात्रा में ही क्यों न हो, हममें वे आने चाहिए। एक चम्मच भर दूध और एक लोटा भर दूध दोनों की ताकतों में फर्क है। लेकिन जायका वही है, स्वाद वही है। ऐसे ही इस रूह में, जीव में जो गुण है, वह चम्मच भर दूध है और भगवान के जो गुण हैं, वह लोटा भर दूध है। लेकिन दोनों का जायका वही है। वह निर्भयता का सागर होगा तो हमारी चम्मच भर निर्भयता में भी वही जायका रहेगा। इसलिए भगवान में जो गुण हैं, वे ही आपमें होने चाहिए। उनकी ताकत में फर्क होगा, पर जायका एक ही होगा। भगवान दयालु होता है तो आपको भी दयालु बनना चाहिए। भगवान निर्भय होता है तो भक्त को भी निर्भय बनना चाहिए। भगवान सबके साथ बराबरी से रहता है तो आपको भी इसी तरह रहना चाहिए।

### मेरा काम भगवान के ही भरोसे

लोग मुझे कहते हैं क्या तू शान्तिसैनिक बनेगा? क्या तेरी यह हिम्मत होगी कि कोई तेरा गला काट ले तो भी तू शान्त रहेगा? मैं कहता हूँ कि मेरा यकीन मेरी शक्ति पर नहीं, भगवान की शक्ति पर है। उसीपर भरोसा रखता हूँ। वह मुझमें ताकत भर देता है। दिल से अहंकार हटाकर वहाँ मैंने भगवान के लिए जगह कर दी है। इसलिए उसीके भरोसे मेरा सब काम चलता है। वैसे ही शान्ति-सेना का काम भी मुझसे वह इसी तरह करायेगा।

◆◆◆

नौशेरा के फौजी भाइयों से

नौशेरा (कश्मीर) २०-६-'५९

## शत्रु के लिए मन में प्रेम और इज्जत रखें

हिंदुस्तान में एक बहुत बड़ा विचार हमारे पुरखों ने हमारे सामने रखा कि समाज के अंदर जिसे जो काम सौंपा गया है—समाज के लिए जो जरूरी है—वह काम जो मनुष्य करेगा, उस पर परमेश्वर कृपा कर सकता है। उसे उसका दर्शन भी हो सकता है। अगर हम ईमान रखें, नेक रहें, किसीपर जुल्म न करें और खुदगर्ज न बनें, समाज के फायदे के लिए काम करें, मान-अपमान को समान समझें तो परमेश्वर हमें मोक्ष हासिल करने के लिए साधन देगा। सचमुच यह बहुत बड़ा विचार है।

### भगवान के दरबार में सब समान

कोई ब्राह्मण वेदाध्ययन करे, लेकिन अपने लिए कोई ख्वाहिश रखे तो बावजूद इसके कि वह वेदाध्ययन करता है, मोक्ष नहीं पायेगा। इससे उलटे कोई मामूली सिपाही—यहाँ तक कि कोई मेहतर या भंगी भी—समाज की, सेवा के खयाल से काम करे तो वह मोक्ष पायेगा। ब्राह्मण भी मोक्ष पायेगा, अगर समाज की सेवा के खयाल से वेदाध्ययन करे। सारांश, चाहे ग्रंथ पढ़ने का काम हो, चाहे लड़ने का, चाहे व्यापार-व्यवहार का काम हो, चाहे खेती का; चाहे शिक्षक हो, चाहे भंगी हो—समाज की खिदमत की दृष्टि से कोई भी काम करता हो तो उसमें कोई दर्जा नहीं है। कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। भगवान के दरबार में सभी-की बड़ी इज्जत होगी।

### सभी एक साथ प्रार्थना करें

आप सारे देश की सेवा में सिपाही बनकर ड्यूटी लगाये रहते हैं। कभी भी काम पड़ जाय, इसलिए हमेशा तैयार रहते हैं। भगवान आपसे यह एक बहुत बड़ी सेवा ले रहा है। हिंदुस्तान के सभी सूबों, सब धर्मों और सब जातियों के लोग यहाँ हैं। सभी दोस्त बनकर रहें, कोई किसीको नीची निगाह से न देखे। आप सबका खाना-पीना, खेलना-कूदना—सब कुछ एक साथ चलता ही होगा। मानो एक कुनबा ही बन गया है। लेकिन जैसे खाना-पीना एक साथ होता है, वैसे ही सबको भगवान का नाम भी एक ही साथ लेना चाहिए। आज मैंने सहज ही पूछा कि क्या यहाँ कोई सत्संग चलता है तो मुझे बताया गया कि हाँ, हिंदू, मुसलिम, ईसाई, सिख—सब अलग-अलग अपनी प्रार्थना करते हैं। इसपर मेरे मन में सहज विचार आया कि खाने, खेलने और लड़ने में हम सब एक साथ रहते हैं, लेकिन जहाँ भगवान का नाम लेने का मौका आया कि बँट जाते हैं, यह ठीक नहीं। मानो यह भगवान बड़ा कम्बख्त है, जिसके नाम से हम बँट जाते हैं। दर असल होना यह चाहिए कि और कामों में चाहे हम बँटे रहें, पर जहाँ भगवान का नाम लेना हो, वहाँ सभी एक हो जायँ। इसके लिए कोई तरकीब ढूँढ़नी चाहिए। गीता, कुरान, गुरुग्रंथसाहब—इनमें से कुछ अंशों का एक साथ पाठ होना चाहिए। यह ऐसी चीज नहीं, जो मुफीद नहीं है। यह भी ठीक है कि गुरु-ग्रंथ, जपुजी, गीता, कुरान आदि के अध्ययन और पठन के लिए आप अलग-अलग भी बैठें। यह भी दिल को मजबूत बनाता है। लेकिन ऐसा भी होना चाहिए कि सब एक साथ बैठें, चंद मिनट खामोश प्रार्थना की जाय। फिर तुलसी-रामायण के कुछ अंश पढ़े जायँ। कुरान की कुछ आयतें, गुरुग्रंथ के और

बाइबिल के कुछ वचन पढ़े जायँ। ये सभी हमें प्रिय होने चाहिए। यह सब मिलकर ही हमारा दिल और हमारा धर्म बनता है। जैसे सा, रे, ग, म आदि सप्त स्वर मिलकर सुंदर संगीत बनता है, वैसे ही यह है। जैसे मिली-जुली संगत, जैसे मिली-जुली पंगत, वैसे ही यह भी मिला-जुला होगा तो हमारा विचार ऊँचा बनेगा।

## जातिभेद का अभिशाप

आज रास्ते में हमने सहज पानीपत की लड़ाई का किस्सा बताया था। एक बाजू अहमदशाह अब्दाली और दूसरी बाजू मराठों की फौज थी। जैसे अभी आप आमने-सामने खड़े हैं, वैसे ही वे एक-दूसरे के आमने-सामने खड़े थे। वे एक-दूसरे को देखना चाहते थे, एकदम हमला करना नहीं चाहते थे। अब्दाली चाहते थे कि मराठों को खाना न मिले, फिर एकदम हमला करें तो वे खत्म हो जायँगे। एक दिन शाम को अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि सामने मराठों की फौज में छोटी-छोटी आगें जल रही हैं। उसने अपने सेनापति से पूछा—"यह क्या हो रहा है?" उसने जवाब दिया कि "इन लोगों में जातिभेद है। ये एक-दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते। इसलिए अलग-अलग रसोई बना रहे हैं।" यह सुनकर अहमदशाह ने अपने साथी से कहा—"अगर ऐसा है, तब तो हमने जीत लिया।"

कहने का सार यह है कि जो एक साथ नहीं खाते, वे एक साथ कैसे मरेंगे? लेकिन आप तो खाना एक साथ खाते हैं। खेलते भी एक साथ हैं। लेकिन भगवान का नाम एक साथ नहीं लेते तो अजीब बात हो जाती है। मेरा यह सुझाव है कि सब एक साथ थोड़ी देर बैठकर भगवान का नाम लें। अलग-अलग साधना अवश्य करें, लेकिन एक साथ साधना भी होनी ही चाहिए। हमारे साथ भी अलग-अलग धर्मवाले लोग रहते हैं, लेकिन प्रार्थना में सब एक साथ हो जाते हैं।

## विज्ञान-युग में 'जय जगत्' से ही टिकाव

एक बात और! सामनेवाले को आप 'दुश्मन' कहते हैं। 'उस तरफ दुश्मन है' ऐसा बोला जाता है। फिर वे भी आपको 'दुश्मन' कहते होंगे। लेकिन हमारे अंदर एक ऐसी चीज है, जो सिखायेगी कि हम सब एक हैं। विज्ञान के जमाने में 'हम सब एक हैं' यह भावना रहेगी, तभी हम टिक पायेंगे। आज आणविक शस्त्र बढ़ रहे हैं और क्या बड़े राष्ट्र और क्या छोटे राष्ट्र, सभी एक-दूसरे से डर रहे हैं। हिंदुस्तान और पाकिस्तान, अमेरिका और रूस दोनों एक-दूसरे से डरते हैं। सर्वत्र भय छाया है और सभी फौज के लिए खर्चा बढ़ा रहे हैं। फौज बिलकुल सज्ज रखी जाती है। इन्सान को इन्सान का डर है, भय है। अतः इन आणविक अस्त्रों को रोकना होगा। नहीं तो इन्सान की बरबादी निश्चित है। इसलिए इस जमाने में 'जय-जगत्' ही बोलना होगा। सब दुनिया की जय हो, सबका भला हो, यही खयाल रखना चाहिए।

मैं यह जो सारा बोल रहा हूँ, इसका मानी यह नहीं है कि आप कोई बेकार काम कर रहे हैं। आपका जो काम है, वह इस परिस्थिति में जरूरी है और वही आप कर रहे हैं। लेकिन आप और हम तब कामयाब होंगे, जब आपके देश में उनको और उनके देश में आपको जाने में कोई रुकावट न होगी। किसी भी देश में दूसरे देशवाले को रोका नहीं जायगा। जैसे बम्बई का नागरिक सारे हिंदुस्तान का नागरिक होता है, वैसे ही हिंदुस्तान का नागरिक कुल दुनिया का नागरिक हो। याने किसी भी देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बनेगा। यही हमें करना है और इसके लिए दिल को व्यापक बनाना होगा।

## धर्मयुद्ध की मर्यादाएँ

अगर लड़ने का मौका आया तो हम लड़ें। अपना फर्ज समझकर लड़ें, लेकिन मन में वैर न हो। अर्जुन और द्रोणाचार्य के बीच ऐसा ही युद्ध हुआ। अर्जुन के लिए द्रोणाचार्य बाप की जगह थे। उसने भगवान से पूछा कि मैं इनके साथ कैसे लड़ूँ? भगवान के कहा: पहले उनके पाँव के पास वंदन के लिए, प्रणाम करने के लिए बाण फेंक। अर्जुन ने उनके पाँव के पास बाण छोड़ा, जिससे वंदन हो गया। फिर लड़ाई शुरू हो गयी। याने पहले उनकी इज्जत करके फिर लड़ना शुरू किया। यह अजीब बात दीखती है। लेकिन धर्म में, धर्मयुद्ध में ऐसा ही होता है। अतः स्पष्ट है कि सामनेवाले के लिए मन में इज्जत होनी चाहिए।

## खलीफा उमर की कहानी

खलीफा उमर की कहानी है। उनका अपने एक भाई के साथ द्वंद्व चल रहा था। दोनों मजबूत थे। आखिर लड़ते-लड़ते खलीफा उमर की फतह होने के आसार दीखने लगे। एक मौका ऐसा आया, जब उसकी छाती पर खलीफा चढ़ बैठे। तलवार ऊपर उठा ली, उसे मारने वाले ही थे कि इसी बीच वह शख्स जिसकी छाती पर बैठे थे, उनके मुँह पर थूँका। दूसरे ही क्षण खलीफा उमर ने अपनी तलवार खींच ली और वे उठ गये। साथियों ने उनसे पूछा—"यह आपने क्या किया, पूरी तरह हाथ में आये प्रतिपक्षी का कत्ल करने के बजाय आपने उसे ऐसे ही क्यों छोड़ दिया?" इसपर उमर ने जो जवाब दिया, वह बड़ा ही सुन्दर है। उन्होंने कहा—"जब वह शख्स थूका तो मुझे गुस्सा आ गया और गुस्सा आ जाने से वह धर्मयुद्ध नहीं रहा। इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया।" छोटी-सी कहानी है, पर इससे बड़ी अच्छी नसीहत मिलती है।

[ चालू ]

### अनुक्रम

१. निडर और शूर ही शांतिसेना....
नौशेरा २० जून '५९ पृष्ठ ५४९
२. शत्रु के लिए मन में प्रेम और इज्जत रखें
नौशेरा २० जून '५९ " ५५१

◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी